भारत सरकार
रेल मंत्रालय
लोक सभा
23.07.2025 के
अतारांकित प्रश्न सं. 669 का उत्तर

उत्तराखंड में नई रेल लाइन

669. श्री अजय भट्ट:

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने देश में रेल नेटवर्क के विस्तार हेतु कोई योजना तैयार की है;

(ख) यदि हाँ, तो उत्तराखंड में नई रेल लाइनों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार का उत्तराखंड के चार धामों (चार धार्मिक स्थलों) को रेल लाइन से जोड़ने का विचार है;

(घ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रोनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) से (ङ): रेल परियोजनाओं का सर्वेक्षण/स्वीकृति/निष्पादन राज्य-वार नहीं बल्कि क्षेत्रीय रेल-वार किया जाता है, क्योंकि रेल परियोजनाएं राज्यों की सीमाओं के आर-पार फैली हो सकती हैं। रेल परियोजनाओं को लाभप्रदता, यातायात अनुमान, अंतिम छोर तक और , अनुपलब्ध कड़ियाँ और वैकल्पिक मार्गों, संकुलित/संतृप्त लाइनों का संवर्धन, राज्य सरकारों, केन्द्रीय मंत्रालयों, संसद सदस्यों, अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा की गई मांगों, रेलवे की अपनी परिचालनिक आवश्यकताओं, सामाजिक-आर्थिक महत्व आदि के आधार पर स्वीकृत किया जाता है जो चालू परियोजनाओं के थ्रो-फॉरवर्ड और निधियों की समग्र उपलब्धता पर निर्भर करता है।

पिछले तीन वर्षों अर्थात वित्त वर्ष 2022-23, 2023-24, 2024-25 और चालू वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान, देश भर में 61,462 किलोमीटर कुल लंबाई के 892 सर्वेक्षण (267 नई लाइन, 614 दोहरीकरण और 11 आमान परिवर्तन) स्वीकृत किए गए हैं। 01.04.2025 **की स्थिति के अनुसार, भारतीय रेल में, लगभग** 6.75 **लाख करोड़ रुपए लागत की** 35,966 **किलोमीटर कुल लंबाई वाली** 431 **रेल अवसंरचना परियोजनाएं (**154 **नई लाइन,** 33 **आमान परिवर्तन और** 244 **दोहरीकरण) स्वीकृत की गई हैं, इसमें से** 12,769 **किलोमीटर लंबाई को कमीशन कर दिया गया है और मार्च,** 2025 **तक लगभग** 2.91 **लाख करोड़ रुपए का व्यय किया जा चुका है। कार्य की संक्षेप में स्थिति निम्नानुसार है:**

कोटि	**परियोजनाओं की संख्या**	**कुल लंबाई नई लाइन/आमान परिवर्तन/दोहरी लाइन (कि.मी. में)**	**मार्च 2025 तक कमीशन की गई लंबाई (कि.मी. में)**	**मार्च 2025 तक व्यय (करोड़ रु. में)**
नई लाइन	154	16,142	3,036	1,45,318
आमान परिवर्तन	33	4,180	2,997	22,753
दोहरीकरण/मल्टीट्रैकिंग	244	15,644	6,736	1,22,858
कुल	431	35,966	12,769	2,90,929

रेल परियोजनाओं का क्षेत्रीय रेल-वार/वर्ष-वार ब्यौरा भारतीय रेल की वेबसाइट पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराया जाता है।

भारतीय रेल पर नए रेलपथ की कमीशनिंग/बिछाने का विवरण निम्नानुसार है:-

अवधि	नए रेलपथ की कमीशनिंग	नए रेलपथ की औसत कमीशनिंग
2009-14	7,599 कि.मी.	4.2 कि.मी./दिन
2014-25	34,428 कि.मी.	8.57 कि.मी./दिन (2 गुना से अधिक)

उत्तराखंड में पूर्णतः/अंशतः पड़ने वाली नई लाइन परियोजनाएं भारतीय रेल के उत्तर रेलवे और पूर्वोत्तर रेलवे ज़ोनों के अंतर्गत आती हैं। रेल परियोजनाओं का क्षेत्रीय रेल-वार विवरण भारतीय रेल की वेबसाइट पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराया जाता है।

पिछले तीन वर्षों अर्थात 2022-23, 2023-24, 2024-25 और वर्तमान वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान, उत्तराखंड राज्य में पूर्णतः/अंशतः पड़ने वाले कुल 146 किलोमीटर लंबाई के 03 सर्वेक्षण कार्य (02 नई लाइन और 01 दोहरीकरण) स्वीकृत किए गए हैं।

01.04.2025 की स्थिति के अनुसार, उत्तराखंड राज्य में पूर्णतः/अंशतः पड़ने वाली 40,384 करोड़ रुपए की लागत की 216 किलोमीटर कुल लंबाई वाली 03 नई लाइनें स्वीकृत की गई हैं, जिनमें से 16 किलोमीटर लंबाई को कमीशन कर दिया गया है और मार्च, 2025 तक 19,898 करोड़ रुपए का व्यय किया जा चुका है।

कार्य की संक्षेप में स्थिति निम्नानुसार है:

योजना शीर्ष	परियोजनाओं की संख्या	कुल लंबाई (कि.मी. में)	कमीशन की गई लंबाई (कि.मी. में)	मार्च 2025 तक व्यय (करोड़ रु. में)
नई लाइन	03	216	16	19,898

उत्तराखंड में पूर्णतः/अंशतः पड़ने वाली अवसंरचना परियोजनाओं और संरक्षा कार्यों के लिए बजट आवंटन निम्नानुसार है:

अवधि	परिव्यय
2009-14	187 करोड़ रुपए प्रति वर्ष
2025-26	4,641 करोड़ रुपए (लगभग 25 गुना)

हाल ही में, उत्तराखंड से बेहतर सम्पर्कता बनाने के लिए हाल ही में देवबंद-रुड़की नई रेल लाइन परियोजना (29 किलोमीटर) को कमीशन किया गया है। इसके अलावा, ऋषिकेश-कर्णप्रयाग नई रेल लाइन परियोजना पर भी कार्य शुरू हो गया है। यह 125 किलोमीटर लंबी परियोजना है जिसमें मुख्य रूप से सुरंगों का निर्माण शामिल है। इस परियोजना की 105 किलोमीटर लंबाई में से लगभग 97 किलोमीटर सुरंग का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है और निर्माण कार्य अग्रिम चरण में हैं। यह परियोजना देवप्रयाग और कर्णप्रयाग जैसे धार्मिक और पर्यटन स्थलों को ऋषिकेश और भारत की राष्ट्रीय राजधानी से रेल संपर्क प्रदान करेगी।

गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ को भारतीय रेल से जोड़ने के लिए चारधाम परियोजना के अंतिम स्थान निर्धारण सर्वेक्षण का कार्य पूरा हो चुका है। परियोजना के दो संरेखण हैं (i) डोईवाला-उत्तरकाशी-बड़कोट जो यमुनोत्री और गंगोत्री तीर्थस्थलों को सेवित करेंगे

(ii) **कर्णप्रयाग-साईकोट-सोनप्रयाग-जोशीमठ केदारनाथ और बद्रीनाथ तीर्थस्थलों को सेवित करेंगे।**

विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार होने के बाद, परियोजना की स्वीकृति के लिए राज्य सरकारों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ परामर्श और अपेक्षित अनुमोदन जैसे नीति आयोग, वित्त मंत्रालय आदि से मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। चूंकि परियोजनाओं की मंजूरी एक सतत और गतिशील प्रक्रिया है, इसलिए निश्चित समय-सीमा तय नहीं की जा सकती।

******